भारतीय ग्रामीण अवसंरचना का आर्थिक,सामाजिक एवं राजनैतिक अध्ययन

मंजीत तिवारी*

*शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,वाराणसी (उत्तर प्रदेश),भारत।

सार: सभी यह बात स्वीकारते हैं कि भारत गांवों का देश है। यह इसलिए कि इसकी लगभग सत्तर प्रतिशत जनता गांव में ही रहती है। वह कृषि पर निर्भर रहती है। वह कृषि के लिए दिन रात खून पसीना एक करती रहती है। उस पर गर्मी सर्दी और बरसात का कुछ भी असर नहीं पड़ता है। इन विशेषताओं के कारण भी भारत को गांवों का देश कहा जाता है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर महात्मा गांधी ने ठीक ही कहा है; कि "भारत की आत्मा इसके गाँवों में निवास करती है।" भारतीय गांवों में ही सेवा और परिश्रम के अवतार किसान बसते है। एक किसान ही नगर वासियों के अन्नदाता है, सृष्टि के पालक है। अपनी उपयुक्त विचारधारा के अनुसार उन्होंने किसानों को बहुत करीब से देखा है। उनकी दशा को सुधारने के लिए ग्रामीण योजनाओं को कार्यान्वित करने पर विशेष बल दिया। इस प्रकार उन्होंने ग्रामीणों की दशा को सुधारने के लिए निरंतर अथक प्रयास भी किए। वर्तमान ग्रामीण सामाजिक संरचना कुछ आधुनिक परिवर्तनों के साथ ठीक वैसे ही है जैसे 18वीं सदी में थी लोगों में संवेदनशीलता हम की भावना और नैतिक मूल्य आज भी कहीं न कहीं उनके लोक व्यवहार में झलकती है, लोगों का अपने परिवार के प्रति, पड़ोस के प्रति, अपने ग्रामीण समाज के प्रति कहीं न कहीं सरोकार बना हुआ आज भी ग्रामीण भारत में लोक संस्कृति के प्रति गहरा जुड़ाव है, तीज त्योहार शादी विवाह और अंतिम संस्कार तक लोग अपने संस्कृति के अनुसार ही निर्वहित करते हैं। भारतीय गांव आज भी पर्यावरण के प्रति इतने संवेदनशील हैं कि हम एक छोटे से आबादी वाले गांव में भी एक दर्जन से ज्यादा वृक्ष और एक दो तालाब तो देख ही सकते हैं इसीलिए एक कहावत बड़ी प्रचलित है कि "शहर की दवा और गांव की हवा बराबर होती है।" और यह सत्य भी है। क्योंकि भारतीय प्रदूषण गुणवत्ता सूचकांक के अनुसार भी ग्रामीण भारत शहरी भारत से कम प्रदूषित है। प्रस्तुत पत्र में यह जानने का प्रयास किया गया वर्तमान में भारतीय गाँवो की सामाजिक संरचना उसकी लोक संस्कृति और पर्यावरणीय दशा में क्या परिवर्तन हुए हैं और वर्तमान में यह कैसी है।

संकेत शब्द : हम की भावना, लोक संस्कृति, सामाजिक मूल्य,पर्यावरणीय नैतिकता, वैश्वीकरण, सामाजिक परिवर्तन ,समाजीकरण।

परिचय

भारतीय गांवों की सामाजिक संरचना का सैद्धान्तिक आधार: अनेक विद्वानों द्वारा भारतीय गाँवों की सामाजिक संरचना का अध्ययन किया गया है जिनमें से प्रमुख श्रीनिवास, दुबे, रेडफील्ड, मजूमदार, मैकिम मैरिएट, मिल्टन सिंगर, बी. आर. चौहान, विलियम बाईजर, आस्कर लेविस, आंद्रे बेते आदि हैं। भारत में अनेक जातियाँ और जनजातियों रहती हैं और कई गाँवों में तो जातियाँ और जनजातियाँ एकसाथ निवास करती हैं। इसके कारण गाँव की संरचना पहले की तुलना में जटिल हो गई है, क्योंकि जातियों में जनजातियों के कई तत्व विलीन हो गए हैं और ऐसा ही कुछ जनजातियों के साथ भी हुआ है। कई गाँव प्रादेशिक विशिष्टताओं के कारण जटिल हो गए हैं, तो कुछ गाँव जनसंख्या अधिकता अथवा न्यूनता नगर से दूरी गाँव की भौतिक बसावट के कारण भी जटिल हो गए हैं। उत्तर भारत के गाँव मध्य और दक्षिण भारत के गाँव से अनेक अर्थों में पृथक अस्तित्व रखते हैं और उनकी सामाजिक संरचना में भी कई विभेद देखे जा सकते हैं। भारतीय गावों की सामाजिक संरचना के बारे में समझ विकसित करने के लिए गाँव के आंतरिक संबंधों समूहों गाँव को समुदायों में समुदाय के रूप में समझना होगा और गाँव की सामाजिक संरचना की स्थाई इकाइयों के बारे में ज्ञान अर्जित करना होगा। दुबे और अन्य विद्वानों ने भारतीय गावों की सामाजिक संरचना को समझने के लिए दो दृष्टिकोण

प्रस्तुत किए हैं। भारतीय ग्राम एक विशेष पूर्ण इकाई के रूप में, भारतीय ग्राम बड़े समुदाय में संबंधित एक छोटी संबंधित इकाई के रूप में,भारतीय गाँव की सामाजिक संरचना के प्रमुख अंगों को यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है,

1. जाति का निर्धारण जन्म से होता है और प्रत्येक जाति का एक पृथक व्यवसाय होता है। इस जाति आधारित व्यवसाय से संबंधित कुछ कर्तव्य होते हैं जो अन्य जातियों से अंतसंबंधित होते हैं। व्यक्ति अपनी ही जाति में वैवाहिक संबंध स्थापित कर सकता है, खान-पान आदि के नियम और निषेध आदि का निर्धारण जाति व्यवस्था द्वारा ही किया जाता है। गाँव में सामाजिक संस्तरण का निर्धारण भी जाति द्वारा ही किया जाता है। सभी जातियाँ आर्थिक संबंधो दायित्वों और कर्तव्यों से आपस में बंधी हुई होती है इसे जनमानी प्रथा की संज्ञा दी जाती है। प्रत्येक जाति की अपनी एक जाति पंचायत होती है जो उनके व्यवहारों को नियंत्रित करती है और जातीय नियमों की अवहेलना पर दंडात्मक कारवाई करती है। जातीय एकता एक गाँव तक ही सीमित नहीं रही है, अपितु यह दूसरे गाँव से भी संबंधित रहती है।

2. ग्राम पंचायत गाँव में ग्राम पंचायत की सत्ता और शक्ति समुदाय की सामाजिक संरचना को संगठित करने का काम करती है। ग्राम पंचायतों पर जाति वर्ग, वंश आदि का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इनके काम में सहयोग करने का काम जाति पंचायतों द्वारा किया जाता है। ग्राम पंचायतों के स्थान पर वर्तमान में पंचायती राज व्यवस्था आधारित पंचायतों की व्यवस्था की गई है, जो कि अधिक प्रजातांत्रिक है।

3. परिवार, विवाह और नातेदारी गाँव की सबसे सूक्ष्मतम इकाई व्यक्ति होता है और उससे ऊपर परिवार, नातेदारी, वंश, उपजाति, वर्ण आदि इकाइयाँ होती है। ग्रामीण परिवारों की संरचना प्रायः विस्तृत और संयुक्त प्रकार की होती है। ये परिवार मुख्यतः पितृसत्तात्मक व पुरुष प्रधान होते हैं और इनका प्रमुख व्यवसाय कृषि होता है। परिवार में मुखिया की सत्ता ही सर्वशक्तिमान होती है। गाँव में विवाह को दो परिवारों को जोड़ने वाली संस्था के रूप में दर्जा दिया जाता है। विवाह एक अनिवार्य संस्था है यह अंतर्जातीय होता है सगोत्र विवाहों पर प्रतिबंध होता है उच्च जातियों में विधवा पुनर्विवाह निषेध है जबकि निम्न जातियों में इसका प्रचलन आम है। परिवार और विवाह के विस्तार से नातेदारी समूह का जन्म होता है। यह वह समूह है जो रक्त और विवाह संबंधित संबंधों पर आधारित होता है। यह व्यक्ति को नियंत्रित करने और निर्देशित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और आज भी विभिन्न गाँवों में ये सामाजिक आर्थिक सुरक्षा के लिए अपने कर्तव्यों का वहन करते हैं।

4. भारत एक धर्म प्रधान देश है। यहाँ अनेक प्रकार के धर्म, मत और संप्रदाय प्रचलित हैं। गाँव में अनेक देवी-देवताओं की पूजा की जाती है और धार्मिक संस्कारों के मानने से आपसी सहयोग समानता और एकीकरण की भावना का संचार होता है। दीपावली, होली, दशहरा कृष्ण जन्माष्टमी, राम नवमी ईद, मुहर्रम पागल, क्रिसमस आदि विशिष्ट अवसरों व त्यौहारों पर लोग संगठित होते हैं और प्रेम व सौहार्द का विकास होता है।

5. आर्थिक संस्थाएं गाँव की अर्थव्यवस्था जाति आधारित होती है। कृषि, पशुपालन व भूमि पर स्वामित्व के आधार पर व्यक्ति का मूल्यांकन किया जाता है। एक लंबे समय से जजमानी व्यवस्था ही गाँव की अर्थव्यवस्था रही है। बाईजर लेविस, दुबे, सिंह व ईश्वरन आदि विद्वानों द्वारा जजमानी व्यवस्था का अध्ययन किया गया। । एस. सी. दुबे ने अपनी पुस्तक इंडियन विलेज में जजमानी व्यवस्था के प्रमुख चार कार्य बताए हैं;

• कृषिगत क्रियाओं से जुड़े व्यवसायों को सेवाएं देना।

• सामाजिक व धार्मिक जीवन से जुड़े कृषि व अन्य व्यावसायिक जातियों को सेवाएं देना।

• कुछ व्यावसायिक सेवाएँ जातियों को परंपरागत सेवाओं के बदले में देना।

• व्यावसायिक सेवाएं नकद भुगतान की उम्मीद से देना।

6. शैक्षणिक संस्थाएं हालांकि गाँवों में औपचारिक शिक्षण संस्थाएं सीमित होती है तथापि वह अनौपचारिक तौर पर जाति द्वारा यह काम किया जाता है। व्यक्ति अपनी परंपरागत जातिगत व्यवसाय पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्राप्त करता रहता है। परिवार द्वारा धार्मिक क्रियाओं कृषि, दस्तकारी, त्यौहारों व व्यापार आदि की जानकारी दी जाती है। आधुनिक समय में गाँव में औपचारिक शिक्षण संस्थाओं की व्यवस्था की जा रही है।

7. प्रतिमान, मूल्य और परिवर्तन ग्रामीण सामाजिक संरचना के रूप में प्रतिमान मूल्य, आदर्श आदि की महत्ता को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है।

अतः हम देख सकते हैं कि,सामाजिक मूल्यों और आदर्शों के आधार पर ही बालक का समाजीकरण किया जाता है और उसे सही एवं गलत में फर्क करना सिखाया जाता है। बालक ही नहीं वरन वयस्क के जीवन में भी सामाजिक मूल्यों और आदर्शों का महत्व बहुत होता है। ये मनुष्य को अनैतिक कार्यों से दूर रहने के लिए प्रेरित करते हैं। परंपरागत ग्रामीण सामाजिक संरचना में कई परिवर्तन भी हुए हैं, यथा सामुदायिक विकास परियोजनाएं समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम, जमींदारी उन्मूलन अधिनियम, पंचवर्षीय योजनाएं पंचायती राज आदि। आज ग्रामीण समाजों में आधुनिकता की छाप को प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है।

भारत में गाँवो की बदलती सामाजिक संरचना पर वैश्वीकरण का प्रभाव :- वैश्वीकरण से तात्पर्य वस्तुओं, सेवाओं, पूंजी, प्रौद्योगिकी, विचारों, सूचनाओं तथा व्यक्तियों के व्यापक सीमा-पार विनिमय से है। भारत द्वारा LPG (उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण) सुधारों को अपनाने के पश्चात 1990 के दशक के प्रारंभ में महत्वपूर्ण नीतिगत परिवर्तन किए गए। इसने उत्पादकता, विकास, आय वितरण, प्रौद्योगिकियों, आजीविका की सुरक्षा तथा नीतियों को प्रभावित करते हुए भारतीय समाज में सभी व्यक्तियों के कल्याण की प्रतिबद्धता अभिव्यक्त की। हालाँकि, इसके साथ वैश्वीकरण ने ग्रामीण भारतीय समाज के लिए कई वास्तविक खतरे भी उत्पन्न किए। इन प्रभावों को हम निम्नलिखित बिंदुओ से समझ सकते हैं,

कृषि: वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप, किसानों को पारंपरिक फसलों के स्थान पर निर्यात उन्मुख नकदी फसलों के उत्पादन हेतु प्रोत्साहित किया गया। कृषि आदानों (inputs) के कुशल उपयोग ने कृषि को आर्थिक रूप से व्यवहार्य तथा लाभदायक बना दिया है। हालांकि, विकासात्मक दबाव ने कृषि भूमि जोतों के आकार को कमी तथा कृषि के व्यावसायीकरण ने किसानों की निजी अभिकर्ताओं पर निर्भरता में वृद्धि की है। इसके अतिरिक्त कृषि सब्सिडी पर विश्व व्यापार संगठन (WTO) के प्रतिबंधों ने राज्यों द्वारा किसानों को प्रदान की जाने वाली सहायता में अवरोध उत्पन्न किया है।

आर्थिक विकास: एक ओर, इसके द्वारा भारत के निर्मित उत्पादों के लिए वैश्विक बाजार को विस्तारित किया है और नई विनिर्माण प्रौद्योगिकियों को प्रस्तुत किया है। हालाँकि, दूसरी ओर विशाल बहुराष्ट्रीय कंपनियों एवं छोटे भारतीय उद्यमों के मध्य असमान प्रतिस्पर्धा के कारण भारत के छोटे एवं मध्यम स्तर के ग्रामीण उद्योग को अत्यधिक प्रतिकूल रूप में प्रभावित किया है। वैश्वीकरण ने ग्रामीण युवाओं को विदेशों में कम कुशल नौकरियों (less skilled job) के अवसरों की खोज करने हेतु भी प्रेरित किया है।

प्रवासन: वैश्वीकरण ने अर्थव्यवस्था में कृषि की हिस्सेदारी को कम करने तथा शहरी क्षेत्रों में नौकरियों के सृजन में योगदान दिया है। हालांकि, इसने ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यबल को कम कर दिया है। 2011 से 2021 के मध्य लगभग 14 मिलियन लोगों ने ग्रामीण क्षेत्रों (अधिकांशतः) से शहरी क्षेत्रों में प्रवास किया। इसके अतिरिक्त ये नौकरियां सामान्यतः अल्प-भुगतान, जोखिमपूर्ण तथा अनौपचारिक बाजार से संबंधित होती हैं।

डिजिटल विभाजन: वैश्वीकरण ने ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता को अत्यधिक प्रोत्साहन दिया है। हालाँकि, शहरी भारत की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट का असंतुलित प्रवेश एवं पहुँच ने मौजूदा डिजिटल विभाजन को और अधिक व्यापक बना दिया है।

सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्य: सांस्कृतिक अवरोधों की समाप्ति से ग्रामीण भारत में भी संकीर्ण-मानसिकता क्षीण हुई है। हालांकि, इस प्रकार के विचार प्रायः ग्रामीण भारतीय समाज की सामाजिक नैतिकता के साथ संघर्षरत रहते हैं, जिस कारण इससे विवाह, पारिवारिक संरचना तथा भूमि-संबंध नकारात्मक रूप से प्रभावित होते हैं।

महिलाओं पर प्रभाव: वैश्वीकरण ने यहाँ तक की ग्रामीण भारत में भी कार्यबल में विशेष रूप से महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हेतु प्रत्यक्ष योगदान दिया है, जिससे उनके सामाजिक एवं आर्थिक सुदृढ़ीकरण में सहायता प्राप्त हुई है। हालाँकि, इसने महिलाओं के लिए एक ही समय में घरेलू एवं कार्यालय संबंधी उत्तरदायित्वों को संतुलित करने संबंधी 'दोहरे जोखिम' (double jeopardy) को भी उत्पन्न किया है।

समग्र रूप से, वैश्वीकरण एक ऐसी वास्तविकता है जो वर्तमान में अनिवार्य एवं स्थिर बन चुकी है। इसके परिणामस्वरूप, उपर्युक्त उपायों को नीतिगत दृष्टिकोण के अंतर्गत एकीकृत किया जाना चाहिए ताकि वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभावों को अधिकतम संभव सीमा तक कम किया जा सके।

लोक संस्कृति और भारतीय गांव:- सामान्य शब्दों में कहें तो लोक संस्कृति निर्माण दो शब्दों से मिलकर हुआ है। लोक+संस्कृति, लोक का अर्थ ऐसे लोगों से है जो प्रायः असभ्य तथा अशिक्षित है तथा एक समूह में मिलजुलकर रहते हैं वहीं संस्कृति का अर्थ है सीखा गया वह व्यवहार जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता है। लोक संस्कृति का वास्तविक अर्थ उस संस्कृति से है जो ग्रामीण और विशेषकर कृषक समाज मे उदय होती है और उसी समाज में विकसित होती है। ग्रामीण लोक संस्कृति को परिभाषित करते हुए जार्ज एम फोस्टर ने बताया है कि लोक संस्कृति को जीवन के एक सामान्य जीवन यापन की विधि के रूप मे देखा जा सकता है जो एक क्षेत्र विशेष के रूप मे बहुत से गाँवों, कस्बों तथा नगरों के कुछ लोगों या सभी लोगों की विशेषता के रूप मे होती है और एक लोक समाज उन व्यक्तियों के एक संगठित समूह के रूप में है जिसकी एक अपनी पृथक लोक संस्कृति होती है। वास्तव में विश्व संस्कृतियों के अध्ययन की दृष्टि से दो प्रकार की संस्कृतियां स्पष्ट रूप में दिखाई देती है। एक लोक संस्कृति है जिसका सीधा संपर्क लोक से है और दूसरी, संस्कृति समाज के विद्वत वर्ग द्वारा सूचित संस्कृति से है जो प्रायः नगरों अथवा विद्या के केन्द्रों में निर्मित होती है। अर्थात् लोक संस्कृति नगरीय व विद्वत समाज की संस्कृति से भिन्न विशेषताओं वाली संस्कृति मानी जाती है।

भारतीय ग्रामीण लोक संस्कृति की विशेषताएं:- वैश्वीकरण के युग में भी भारतीय लोक संस्कृति अपनी अनूठी विशेषताओं के साथ जीवित है इन विशेषताओं का हम अधोलिखित रूप में अवलोकन कर सकते हैं, जैसे:-

स्थानीय स्वरूप:-भारत के ग्रामीण जीवन में अनेक ऐसे देवी-देवताओं पर विश्वास किया जाता है तथा अनेक ऐसे त्यौहार मनाए जाते हैं जिनका विस्तार संपूर्ण भारत में है। परंतु फिर भी यहां के गांवों में अनेक ऐसे देवी-देवता त्योहार, अनुष्ठान आदि देखे जाते हैं जिनका विस्तार संपूर्ण भारत में ना होकर केवल स्थानीय ही होता है। लोक संस्कृति में इस स्थानीय स्वरूप को ही अधिक महत्व दिया जाता है। धर्म और विश्वासों का यह स्थानीय स्वरूप लोक संस्कृति की विशेषता को स्पष्ट करता है।

परिवार और समुदाय लोक संस्कृति संरक्षक:-परिवार और समुदाय ही लोक संस्कृति के वास्तविक संरक्षक है। ग्रामीण अंचलों के परिवार और समुदाय आज भी अपने सभी उत्सवों, रीति-रिवाजों, पर्वों आदि को लोक संस्कृति के विश्वासों के आधार पर करते हैं। यह लोक संस्कृति के आधार है।

पिछड़े हुए समाज की संपत्ति :-लोक संस्कृति पिछड़े हुए समाज से जुड़ी हुई है। इसका जन्म ही जनजातियों, कबीलों और कृषि-समाज में हुआ है। इसीलिए सभ्यता और संस्कृति के विकास के साथ यह भी विकसित हुई है किन्तु अपने ही समुदाय की सीमाओं में प्रभावी रूप से कार्य करती रही है। इसीलिए लोक संस्कृति में जितनी विविधता है उतनी नगरीय संस्कृति में नहीं है।

कृषि पर आधारित :-इसमें दो मत नहीं है कि भारत की लोक संस्कृति मूलतः कृषि समाज से जुड़ी हुई है। ग्रामीण समाज में अधिकांश कार्य, उत्सव, मेले और हाट, पूजा-पाठ, ग्रामीण देवी-देवता की पूजा, लोक नृत्य और लोक गीत आदि कृषि से संबंधित है।

व्यवसायीकरण का अभाव :-लोक संस्कृति अव्यावसायिक होती है। इसकी अभिव्यक्ति व प्रदर्शन का उद्देश्य मुनाफा कमाना नहीं होता। इससे संबद्ध विचारक, कलाकार, संगीतज्ञ, शिल्पकार इत्यादि अपनी कला का प्रदर्शन लाभ प्राप्ति के लिए नहीं करते बल्कि उनका उद्देश्य मनोरंजन एवं ग्रामीण जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करना होता है।

पिछड़े हुए समाज की संपत्ति -लोक संस्कृति पिछड़े हुए समाज से जुड़ी हुई है। इसका जन्म ही जनजातियों, कबीलों और कृषि-समाज में हुआ है। इसीलिए सभ्यता और संस्कृति के विकास के साथ यह भी विकसित हुई है किन्तु अपने ही समुदाय की सीमाओं में प्रभावी रूप से कार्य करती रही है। इसीलिए लोक संस्कृति में जितनी विविधता है उतनी नगरीय संस्कृति में नहीं है।

सामूहिकता की भावना -लोक संस्कृति किसी व्यक्ति विशेष की निधि नहीं है। यह सम्पूर्ण समाज के सहयोग से अनजाने किसी कारण से उत्पन्न हुई और सम्पूर्ण समाज की सम्पत्ति बन गयी है। लोक संस्कृति में सामूहिक प्रेरणा, सामूहिक हिस्सा लेने की भावना और सामूहिकता पायी जाती है। इसलिए यह आज भी जीवित है।

भारतीय गाँवो में पर्यावरणीय मुद्दे और समाधान:- आज भी जब हम भागदौड़ भरे जीवन से ऊबते हैं तो किसी सुरम्य स्थान की खोज में निकलते हैं जहाँ मानसिक रूप से हम तनाव मुक्त होकर खुली हवा में सांस ले सकें और यह खोज पूरी होती है सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में जहर हरे भरे उपवन और शीतल हवाएँ जिनकी वायु गुणवत्ता शहरी क्षेत्रों के वायु से कई गुना बेहतर होती है कारण है आज भी भारतीय गांव अपनी मूल प्रकृति से जुड़े हुए हैं वहां पीपल में भगवान विष्णु तो नीम में शीतला माता का निवास माना जाता है पारिजात और तुलसी के पौधे लगभग सभी घरों के आंगन में मिल जाएंगे। लोग आज भी खुद के खेत में उगाई गयी सब्जियों और फलों का इस्तेमाल करते हुए दिख जाएंगे आज भी गांवों में वृक्ष काटना अपराध मन जाता है।

उपरोक्त बातें यह दर्शाती हैं कि आज भी ग्रामीण भारत प्रकृति पूजक के साथ पर्यावरण संरक्षक की भूमिका का बखूबी निर्वहन कर रहा है, जिसका लाभ उसे स्वच्छ वातवरण में खुली सांस लेने की उचित दशा के रूप में मिल रहा है। लेकिन विकास के चकाचौंध से गांव भी अब बुरी तरह प्रभावित होने लगे हैं।इन दिनों खेती में अन्न के बदले जैविक ईंधन उगाने का फैशन चल निकला है। इस ईंधन से भी 11.3 प्रतिशत ग्रीनहाउस गैसें उत्पन्न हो रही हैं साथ ही साथ रासायनिक उर्वरक कीटनाशक दवाओं और अतिरेक जलदोहन ने भारतीय गावों के पर्यावरण को दूषित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

भारतीय गांवों में पर्यावरणीय मुद्दों का समाधान-गांवों में विकास के साथ ही पर्यावरण संरक्षण की दिशा में केंद्र सरकार के केंद्रीय ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम का महत्वपूर्ण स्थान है। राज्य सरकारों द्वारा इस दिशा में किए जा रहे प्रयासों को केंद्र सरकार केंद्रीय ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम के तहत तकनीकी और वित्तीय सहायता प्रदान कर और मजबूती प्रदान कर रही है। स्वच्छता के विचार को विस्तारित कर 1993 में व्यक्तिगत स्वच्छता, गृह स्वच्छता, सुरक्षित पेय जल तथा कूड़े-कचरे, मानव मलमूत्र और नाली के दूषित पानी के निस्तारण को इसमें शामिल किया गया है। गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन कर रहे परिवारों के लिए स्वच्छ शौचालयों का निर्माण, शुष्क शौचालयों का फ्लश शौचालयों में उन्नयन, महिलाओं के लिए ग्राम स्वच्छता भवनों का निर्माण, स्वच्छता बाजारों तथा उत्पादन केंद्रों की स्थापना, स्वास्थ्य शिक्षा और जागरूकता के लिए सघन अभियान चलाना आदि भी इस कार्यक्रम के अंग हैं।

स्वच्छ भारत मिशन और ग्रामीण पर्यावरण:- स्वच्छ भारत मिशन किस शुरुआत 2 अक्टूबर 2014 को हुई थी जिसका लक्ष्य महात्मा गांधी की 150वी जयंती पर देश को शत प्रतिशत खुले में शौच मुक्त करना था वर्तमान में देश की ग्रामीण स्वच्छता कवरेज 99 प्रतिशत का आंकड़ा पार कर चुकी है और स्वच्छ भारत मिशन अपने अन्तिम चरण में है। 30 राज्य और केन्द्रशासित प्रदेश खुद को

खुले में शौच से मुक्त घोषित कर चुके हैं। मिशन इस प्रगति के फायदों को निरन्तर बनाए रखने और ओडीएफ-प्लस चरण को गति देने पर ध्यान केन्द्रित कर रहा है जिसमें ठोस और तरल अपशिष्ट का प्रबन्धन शामिल है।

यह सर्वविदित है कि भारत गाँवो का देश है ग्रामीण पर्यावरण में होने वाला कोई भी परिवर्तन पूरे राष्ट्र के लिए गंभीर समस्या तथा पर्यावरण में होने वाला सुधार पूरे देश के लिए लाभदायक है इसी क्रम में चिपको आंदोलन, अपिको आंदोलन नर्मदा बचाओ आंदोलन मध्य प्रदेश का रक्षाबंधन आंदोलन जिसमें विभिन्न अवसरों पर पेड़ों को रक्षाबंधन बाँधा जाता है साथ ही बिहार के भागलपुर का एक बेटी के जन्म पर द पौधे लगाए जाने की नवीन परम्परा प्रारम्भ हुई है। वर्तमान में वैश्विक पर्यावरण आंदोलनों ने भारत के ग्रामीण क्षेत्रों को बखूबी प्रभावित किया है सामाजिक वानिकी कार्यक्रम ने ग्रामीण भारत में वृक्षावरण को बढ़ाया है जिससे ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा मिल रहा है जो ग्रामीण भारत के लिए एक अच्छा संकेत है।

निष्कर्ष:- जब भी हम भारतीय गाँवो के विषय पर सर्वांगीण चर्चा करते हैं तो गाँवो की बसावट अर्थात उसकी सामाजिक संरचना उसके आर्थिक, राजनैतिक,सांकृतिक और पर्यावरणीय संरचनाओं से कहीं न कहीं गहरे रूप से जुड़ी होती है गांव में आज भी जाति व्यवस्था अपनी जीर्णावस्था में विद्यमान है जहां ऊंची जाति के लोग तथाकथित नीची जाति के लोगों से रिश्ते नहीं बनाते हैं लेकिन वैश्वीकरण के प्रभाव तथा आधुनिक शिक्षा के प्रसार ने इन रूढ़ियों को तोड़ने का कार्य किया है जो कहीं न कहीं सांस्कृतिक परिवर्तन की आहट भी है। गावों में अब आर्थिक समृद्धि के साथ रहन सहन में व्यापक बदलाव आया है विलासिता की ओर बढ़ता ग्रामीण समाज अब कृषि से दूर उद्योगों की ओर बढ़ने लगा है जिससे गाँवो की पारंपरिक पारिस्थितिकी में विकृति उत्पन्न होने लगी है कुओं के स्थान पर ट्यूबवेल ने भूमिगत जल का बखूबी दोहन कर भूजल स्तर को को कम कर दिया है तो तो हल बैल के स्थान पर ट्रैक्टरों के प्रयोग ने कॉर्बन उत्सर्जन को बढ़ाया है, साथ ही आधुनिक कृषि और हरित क्रांति ने समृद्ध गाँवों की संकल्पना को बढ़ावा दिया जो आधुनिक तकनीक के साथ अब लोक संस्कृति के लिए ही खतरा बन गया है क्योंकि ग्रामीण समाज अब धोबिया चरकुला नृत्य और और कजरी बिरहा के स्थान पर पॉप संगीत और क्लब डांस तथा देशी अखाड़े की जगह जिम जैसी पाश्चात्य कलाओं को अपनाने लगा है। लोक कलाएं ग्रामीण समाज की धरोहर हैं जो ग्रामीण पर्यावरण और ग्रामीण समाजार्थिक संरचना का मूल आधार है इनका संरक्षण ही भारत को गांवों का देश बनाये रख सकता है अन्यथा शहरी करण की तीव्र गति भारतीय गांवों के साथ साथ भारतीय लोक जीवन का भी विनाश कर देगी। सुझावात्मक रूप में कहें तो खोते हुए भारतीय गांवों के लोकजीवन को फिर से पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ सूची:-

1. श्री निवास , एम० एन० : सोशल चेन्ज इन माडर्न इण्डियां1966 ब्रेक्ले यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस.

2. दूबे , एस० सी० : रैन्किंग आफ काट्स इन तेलंगाना विलेज 1955

3.जोशी,अरविंद, कुमार/ वी. मोहन (2002) उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हरिद्वार

4. https://hindi-essay.com/essay-on-indian-village/

5.अम्बेडकर, बी.आर. (1936). एनिहलेशन ऑफ कास्ट. नई दिल्ली : आर्नल्ड पब्लिकेशन.

6. अवस्थी, ए.पी. 2013. भारतीय शासन एवं राजनीति. जयपुर : आगरा.

7.https://www.kailasheducation.com/2021/07/lok-sanskriti-arth-paribhasha-visheshtayen.html